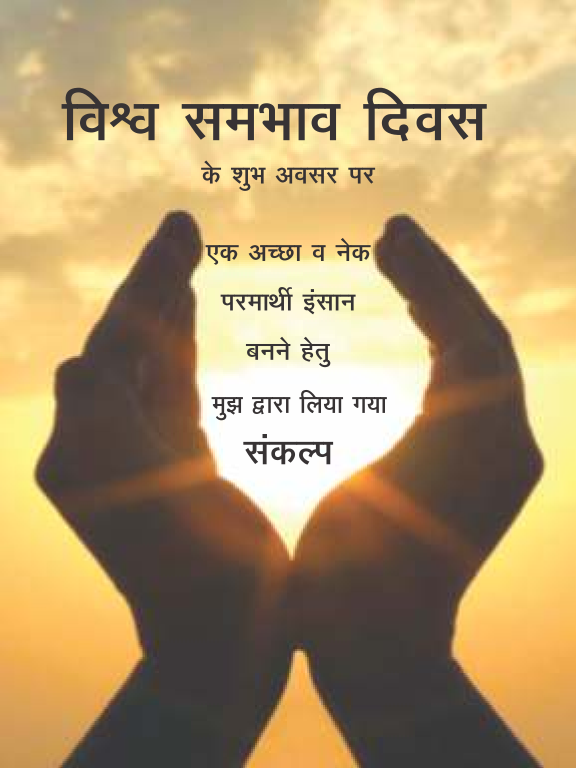

विश्व समभाव दिवस
के शुभ अवसर पर
एक अच्छा व नेक
परमार्थी इंसान
बनने हेतु
मुझ द्वारा लिया गया
संकल्प

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड
फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)

पहले पढ़ो
फिर
आगे बढ़ो।

साडा है सजन राम,
राम है कुल जहान।

आज से मैं ईश्वर को ही अपना
मित्र, प्रियतम व सर्वव्यापक
मानते हुए

उसी को ही जानूँगा, मानूँगा और
वैसे ही गुण अपनाऊँगा।

इस तरह सजनता का प्रतीक
बन जाऊँगा।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है।

अब के बाद मैं ज्ञानी को
नहीं, ज्ञान को अपनाऊँगा

यानि

निमित्त में नहीं,
नित्य में श्रद्धा बढ़ाऊँगा।

हे सतयुग दर्शन वसुन्धरा,
यह सृष्टि तेरे अर्पण है।

हर ज्ञानी और अज्ञानी का सत्य
स्वरूप तूं दर्पण है।।

आगे बढ़ने से पूर्व मैं अब तक अपनाए ज्ञान-अज्ञान की तुलना करके, अंतर्निहित मनुष्यत्व के सत्य को परखते हुए, खुद में पाई विकृतियों का सुधार कर निर्विकारी बनने के लिए तत्पर हो गया हूँ।

अतः मैं अब बुरे से अच्छा इंसान बन अपने चैतन्य स्वरूप का बोध करने का संकल्प लेता हूँ।

इन शुभ संकल्पों को लेने के पश्चात् अब यह मानकर आगे बढ़ो कि परमेश्वर आप के साथ हैं और साथ ही यह जानो कि किस स्वाभाविक पोशाक को धारण कर आप अपना जन्म सफल बना सकते हो

संतोष

अर्थात् किसी बात की इच्छा, चिंता या शिकायत न करते हुए सदा तृप्त व प्रसन्नचित्त रहना।

लोभ/लालच, आशा-तृष्णा व कामनायुक्त भाव-स्वभाव त्याग, मैं सदैव अपनी हैसियत में ही संतुष्ट बने रहने का दृढ़ निश्चय लेता हूँ।

धैर्य

यानि चित्त को स्थिर रखते हुए सदा
निर्विकार बने रहने हेतु उसमें किसी
कारण उद्वेग यानि व्याकुलता का भाव
न उत्पन्न होने देना।

मैं जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से
हार कर कभी अधीर नहीं होऊँगा

यानि दुःख आने पर कभी घबराऊँगा नहीं
व सुख आने पर कभी हर्षाऊँगा नहीं।

मैं जीवन की हर ऊँच-नीच में सदा
धैर्यवान बने रहने का प्रण लेता हूँ।

सच्चाई

ईश्वर कहते हैं 'जो तूं चाहे कहाँ वैसा होय, जो मैं चाहूँ सब वैसा होय'

इस कथन को मानते हुए उत्तम आचरण द्वारा यथार्थता से यानि जैसा है वैसा ही जीवन जीना।

छल-कपट, झूठ-चतुराईयाँ, चोरी-ठगी करके मैंने अब तक जितना भी कष्टमय जीवन जिया वह अब और नहीं,

अतः अब मैं सदा सत्य पथ पर धर्मसंगत अग्रसर रह अपने जीवन को आलोकित करने का संकल्प लेता हूँ।

धर्म

मानव धर्म के अनुरूप स्वभाव अपनाकर यह सुनिश्चित करना कि वह वृत्ति अखंडता से मुझमें सदा रहे, मुझसे कभी अलग न हो। इसके प्रति सचेत हो, अपने कर्त्तव्यों का पालन करना।

स्वार्थवश मैं भ्रष्टाचारी, दुराचारी, अत्याचारी व व्यभिचारी हो निज मानव धर्म हार बैठा हूँ।

अतः ऐसा बुरा चलन अपना अब मैं अपना जीवन बर्बाद नहीं कर सकता।

इसलिए आज से, अभी से

मैं धर्म के निष्काम रास्ते पर चलते हुए मानवता का प्रतीक बनने का अटल निश्चय लेता हूँ।

सम

अपने चित्त की अवस्था या वृत्ति सब जगह समान रखना व परस्पर समान आचरण और व्यवहार करना।

द्वि-द्वैत वश परस्पर तेरी-मेरी, वैर-विरोध, लड़ाई-झगड़े, ईर्ष्या-द्वेष, प्रतिस्पर्धा-प्रतिद्वन्द्विता की होड़ में फँस मैं क्यों कर अपना अनमोल मानव जीवन व्यर्थ गँवा रहा हूँ?

नहीं नहीं अब और नहीं।

ईश्वर सम है इस सत्य को मानते हुए मैं समभाव-समदृष्टि अपनाकर, यथार्थता से जीवन जीना सुनिश्चित करने का प्रण लेता हूँ।

निष्काम

चित्त को शुद्ध रखने के लिए हर काम इच्छा, आसक्ति व फल की कामना से रहित होकर करना ताकि मुक्ति प्राप्त हो।

कामनावश हो मैं अब तक आवागमन की त्रास भुगत रहा हूँ।

अतः इस चक्रव्यूह से आजाद होने हेतु आज मैं हर काम निष्कामता व अकर्त्ता भाव से प्रसन्नतापूर्वक सम्पन्न करने का संकल्प लेता हूँ।

परोपकार

अपना प्रत्येक कार्य सर्वहित के
सिद्धान्त के अनुरूप करते हुए
परमार्थ हो जाना।

मैं-मेरा के चक्कर में फँस कर मैंने
अपने लिए व अपनों के लिए बहुत
मान/धन/यश प्राप्त कर लिया
पर फिर भी शांति की प्राप्ति नहीं हुई।

अतः अखंड शांति की प्राप्ति हेतु अब मैं
सर्वहित के सिद्धान्त अनुरूप अपना
सर्वस्व ईश्वर के निमित्त अर्पित कर
प्राणी जगत की निष्कामता से सेवा
करने की शपथ लेता हूँ।

ध्यान-कक्ष

अर्थात्

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

एकता का प्रतीक

ध्यान-कक्ष यह ध्यान-कक्ष
सबका सांझा ध्यान-कक्ष
सतयुग की पहचान है यह
मानवता का स्वाभिमान है यह

ऐसा बनने हेतु ख़्याल ध्यान
वल, ध्यान प्रकाश वल रख
अपने यथार्थ स्वरूप को पा लो
और ब्रह्म भाव अनुसार जगत में
विचरते हुए जीवन की बाज़ी
जीत लो।

अंत में सजनों अब जब आपने ऊपरवर्णित तथ्य को पढ़-समझ कर धारण करने का व अपने जीवन की बाजी जीत लेने का संकल्प ले लिया है तो अपने परिवारजनों, मित्रों व सगे-सम्बन्धियों आदि को भी यह शुभ संकल्प लेने के लिए प्रेरित करो और निष्कामता से एक स्वच्छ, सुन्दर व शांतमय समाज का

निर्माण करने में अपना भरपूर सहयोग दो ताकि इस धरा से कलुकाल का नामोनिशान मिट जाए और इंसान की वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी बाणा निर्मल हो जाए। इस तरह सब सतयुग में प्रवेश पा विश्राम को पाएं। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

कलुकाल जाणां सतवस्तु आणां, जीवां ने सोचदियां रह जाणां पछोताणां।

चलो चलिए रघुवंशमणि कोलों, ओही हिन साडा गहणा।।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों समय निकल जाने पर किसी को न पछताना पड़े इसलिए वक्त पर ही स्वार्थपरता का अविचारयुक्त दुःखद

रास्ता छोड़, परमार्थ के विचारयुक्त सुखद मार्ग पर अग्रसर हो जाओ और विचार, सत्-जबान, एक दृष्टि, एकता और एक-अवस्था में बने रहते हुए आनन्द से जीवन बिताओ और परमपद को पाओ।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।